मेघदूत विषयक वक्तव्य: 05

मेघदूत (पूर्व मेघ) 21 से 25 श्लोक अनुवाद सहित

(ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय के संस्कृत ऑनर्स प्रथम वर्षीय छात्र-छात्राओं के द्वितीय पत्र की प्रथम अन्विति के लिए। मेघदूत के पूर्व मेघ के 1 से 25 तक श्लोकों का हिंदी अनुवाद विषयक पाठ्य सामग्री)

पाठ्य संकलनकर्त्ता: डॉ. विकास सिंह, संस्कृत विभागाध्यक्ष, मारवाड़ी कॉलेज, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा, बिहार।

(21)

नीपं दृष्ट्वां हरितकपिशं केसरैरर्धरूढै-

राविर्भूतप्रथममुकुला: कन्दलीश्चानुकच्छम्।

जग्ध्वारण्येष्वधिकसुरभिं गन्धमाघ्राय चोर्व्या:

सारंगास्ते जललवमुच: सूचयिष्यन्ति मार्गम्।।

अर्थः- हे मेघ, जल की बूँदें बरसाते हुए तुम्हारे जाने का जो मार्ग है, उस पर कहीं तो भौरे अधखिले केसरोंवाले हरे-पीले कदम्बों को देखते हुए, कहीं हाथी कछारों में भुँई-केलियों के पहले फुटाव की कलियों को टूँगते हुए, और कहीं हाथी जंगलों में धरती की उठती हुई उग्र गन्ध को सूँघते हुए मार्ग की सूचना देते मिलेंगे।

(22)

उत्पश्चामि द्रुतमपि सखे! मत्प्रियार्थं यियासोः

कालक्षेपं ककुभरसुरभौ पर्वते पर्वते ते।

शुक्लापांगः सजलनयनैः स्वागतीकृत्य केकाः

प्रत्युद्यातः कथमपि भवान्गन्तुमाशु व्यवस्येत्।।

अर्थः- हे मित्र, मेरे प्रिय कार्य के लिए तुम जल्दी भी जाना चाहो, तो भी कुटज के फूलों से महकती हुई चोटियों पर मुझे तुम्हारा अटकाव दिखाई पड़ रहा है। सफेद डोरे खिंचे हुए नेत्रों में जल भरकर जब मोर अपने कण्ठस्वर से तुम्हारा स्वागत करने लगेंगे, तब जैसे भी हो, जल्दी जाने का प्रयत्न करना।

(23)

पाण्डुच्छायोपवनवृतयः केतकैः सूचिभिन्नै-

र्नीडारम्भैर्गृहबलिभुजामाकुलग्रामचैत्याः।

त्वय्यासन्ने परिणतफलश्यामजम्बूवनान्ताः

संपत्स्यन्ते कतिपयदिनस्थायिहंसा दशार्णाः।।

अर्थः- हे मेघ, तुम्हारे निकट आते ही दशार्ण देश में उपवनों की कटीली रौंसों पर केतकी के पौधों की नुकीली बालों से हरियाली छा जाएगी, घरों में आ-आकर रामग्रास खानेवाले कौवों द्वारा घोंसले रखने से गाँवों के वृक्षों पर चहल-पहल दिखाई देने लगेगी, और पके फलों से काले वाले जामुन के वन सुहावने लगने लगेंगे। तब हंस वहाँ कुछ ही दिनों के मेहमान रह जाएँगे।

(24)

तेषां दिक्षु प्रथितविदिशालक्षणां राजधानीं

गत्वा सद्यः फलमविकलं कामुकत्वस्य लब्धा।

तीरोपान्तस्तनितसुभगं पास्यसि स्वादु यस्मा-

त्सभ्रूभंगं मुखमिव पयो वेत्रवत्याश्चलोर्मि।।

अर्थः- उस देश की दिगन्तों में विख्यात विदिशा नाम की राजधानी में पहुँचने पर तुम्हें अपने रसिकपन का फल तुरन्त मिलेगा - वहाँ तट के पास मठारते हुए तुम वेत्रवती के तरंगित जल का ऐसे पान करोगे जैसे उसका भ्रू-चंचल मुख हो।

(25)

नीचैराख्यं गिरिमधिवसेस्तत्र विश्रामहेतो-

स्त्वसंपर्कात्पुलकितमिव प्रौढपुष्पैः कदम्बैः।

यः पण्यस्त्रीरतिपरिमलोद~गारिभिर्नागराणा-

मुद्दामानि प्रथयति शिलावेश्मभिर्यौ वनानि।।

अर्थः- विश्राम के लिए वहाँ 'निचले' पर्वत पर बसेरा करना जो तुम्हारा सम्पर्क पाकर खिले फूलोंवाले कदम्बों से पुलकित-सा लगेगा। उसकी पथरीली कन्दराओं से उठती हुई गणिकाओं के भोग की रत-गन्ध पुरवासियों के उत्कट यौवन की सूचना देती है।